राष्ट्रभाषा-राजभाषा में अंतर

राष्ट्रभाषा (National Language)	राजभाषा (Official Language)
1 पूरे राष्ट्र की बहुसंख्यक व सम्पर्क भाषा।	1 राजकार्य की भाषा।
2. क्षेत्र विस्तृत (राष्ट्रीय)।	2. सीमित क्षेत्र (शासन, विधान, न्याय और कार्यपालिका)
3. जनमानस से संबंधित।	3. शासक-प्रशासक वर्ग से संबंधित।
4. सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व।	4. राजनीतिक व प्रशासनिक महत्त्व।
5. लोकजीवन से सरोकार।	5. बुद्धिजीवियों, प्रशासकों, अधिकारियों, कर्मचारियों से सरोकार।

5. राष्ट्रभाषा

- **राष्ट्रभाषा का अर्थ है**—राष्ट्र की भाषा। जो भाषा पूरे राष्ट्र में संपर्क साधने का काम करे उसे 'राष्ट्रभाषा' कहते हैं। राष्ट्रभाषा को 'संपर्क भाषा' भी कहते हैं।
- **हरदेव बाहरी**—जो भाषा थोड़ी बहुत सारे राष्ट्र में बोली और समझी जाती है, वह अपने इसी गुण में राष्ट्रभाषा होती है।—**[हिन्दी-उद्भव, विकास और रूप-हरदेव बाहरी]**
- **काका कालेलकर**—राष्ट्रभाषा को हम और कई नाम देंगे। उसको सबको बोली कहेंगे, कौमी जबान कहेंगे, हृदय की भाषा कहेंगे, स्नेह भाषा या ऐक्य भाषा कहेंगे और सबसे बढ़कर स्वराज्य-भाषा कहेंगे।—**[राष्ट्रभारती]**
- **नंददुलारे वाजपेयी**—राष्ट्रभाषा की कल्पना राज्यभाषा से भिन्न है। उसका पद और भी बड़ा है। उसी भाषा का गौरव अधिक हो सकता है और वही राष्ट्रभाषा कहला सकती है जिसको सब जनता समझती हो और जिसका अस्तित्व सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो।—**[राष्ट्रभाषा की कुछ समस्याएँ, नंद दुलारे वाजपेयी]**

राष्ट्रभाषा की विशेषताएँ—

- बहुसंख्यक वर्ग की भाषा।
- सरल भाषा व वैज्ञानिक लिपि ।
- संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त भाषा ।
- देश में शिक्षा, रोजगार, समाचार पत्रों की भाषा।
- सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता की भाषा।
- देश के नागरिकों के लिए जातीय गौरव, एकता, अखंडता की भाषा।

Scanned with CamSc

6. मानक या परिनिष्ठित भाषा

- मानक या परिनिष्ठित भाषा का अर्थ हिन्दी भाषा के उस स्थिर रूप से है जो अपने पूरे क्षेत्र में शब्दावली या व्याकरण की दृष्टि से समरूप हो, सभी लोगों द्वारा मान्य और सरलता से ग्राह्य हो तथा शिक्षित एवं शिष्ट समाज उसे अपनी भाषा का आदर्श रूप माने।
- **श्यामसुन्दर दास**—कई विभाषाओं में व्यवहृत होनेवाली एक शिष्ट परिगृहीत विभाषा ही भाषा या टकसाली भाषा कहलाती है। विभाषाओं का अपने प्रांत में जन्मसिद्ध अधिकार होता है। जब कोई बोली आसपास की अनेक बोलियों से व्यवहार में आगे बढ़ जाती है तब वह भाषा या मानक भाषा का रूप ले लेती है।
- **मेरिया पेइ**—परिनिष्ठत भाषा किसी भाषा की उस विभाषा (Dialect) को कहा जाता है जिसे साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अन्य विभाषाओं की तुलना में वरेण्यता प्राप्त हो जाती है तथा जिसे अन्य विभाषा-भाषी सामाजिक दृष्टि से सर्वाधिक उपयुक्त भाषा स्वीकार कर लेते हैं।
- **हरदेव बाहरी** के अनुसार-"भाषा के मानकीकरण या परिनिष्ठित करने का अर्थ है-एकरूपता लाना। इससे भाषा को आदर्श रूप प्राप्त होता है। मानक बनने का अर्थ है-बोलीगत विशिष्टताओं का लोप होना।"
- वस्तुतः, वह व्याकरणसम्मत भाषा जो व्याकरण के नियमों से आबद्ध हो तथा जिसका व्यापक प्रयोग समाज के शिष्टवर्ग द्वारा किया जाये वह '**परिनिष्ठित भाषा**' है।
- राष्ट्रभाषा हिन्दी, राजभाषा हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी तीनों का आधार परिनिष्ठित हिन्दी है।
- परिनिष्ठित या परिष्कृत भाषा को स्टैंडर्ड भाषा, आदर्श भाषा, मानक भाषा, राष्ट्रभाषा या टकसाली भाषा कहा जाता है।
- परिनिष्ठित भाषा राजकीय स्तर पर स्वीकृत होने से यह आदर्श भाषा होती है। शासन, शिक्षा, साहित्य इत्यादि के क्षेत्र में इसका प्रयोग होता है।
- परिनिष्ठित भाषा को अंग्रेजी में 'स्टैण्डर्ड लैंग्वेज' (Standard language) कहा जाता है।
- **श्यामसुन्दर दास ने परिनिष्ठित भाषा को 'टकसाली भाषा' कहा है।**

Scanned with CamSc

मानक भाषा की विशेषताएँ-

मानक भाषा अथवा परिनिष्ठित भाषा के 7 तत्त्व माने गये हैं-

1. **ऐतिहासिकता**-ऐतिहासिकता मानक भाषा का प्रथम तत्त्व है। किसी की मानक भाषा एक इतिहास होता है। वह पहले बोली, फिर भाषा और उसके बाद मानक रूप में ढलती है।
2. **स्वायत्तता**-मानक भाषा स्वायत्त रूप लिए होती है क्योंकि उसका एक नियमबद्ध व्याकरण एवं भाषा-रूप होता है, ताकि उसके परिमार्जित रूप में अस्थिरता उत्पन्न न हो।
3. **केन्द्रोमुखता**-मानक भाषा का रूप ग्रहण करने पर वह केन्द्रीकृत प्रवृत्ति की ओर उन्मुख होती है ताकि उसके परिमार्जित रूप में अस्थिरता उत्पन्न न हो।
4. **बहुसंख्यक प्रयोगशीलता**-बहसंख्यक जनता द्वारा स्वीकृत होने पर भाषा सर्वग्राह्य बन जाती है। बहुसंख्यक प्रयोगशीलता मानक भाषा का एक प्रमुख तत्त्व है।
5. **सहजता**-मानक भाषा का स्वरूप सरल व सहज होता है।
6. **बोधगम्यता**-मानक भाषा में बोधगम्यता होती है।
7. **सर्वविध एकरूपता**-शासन, विधान, न्याय, कार्यपालिका, शिक्षा, साहित्य, प्रशासन, विज्ञान, अध्यात्म इत्यादि विविध क्षेत्रों में मानक भाषा एक रूप लिये होती है।

- 1. व्याकरणसम्मत 2. सर्वमान्य 3. क्षेत्रातीत 4. एकरूपता 5. सुस्पष्ट, सुनिर्धारित, सुनिश्चित 6. शैक्षिक सांस्कृतिक प्रशासनिक, संवैधानिक क्षेत्रों में कार्य-संपादित करने में समर्थ 7. नये शब्दों के ग्रहण और निर्माण में समर्थ तथा नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर विकासशील 8. वैयक्तिक प्रयोगों की विशिष्टता इत्यादि मानक भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

7. व्यक्तिबोली

- **भाषा की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति बोली होती है।** एक व्यक्ति की भाषा को व्यक्तिबोली कहा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की भाषा, ध्वनि-भेद, स्वर-भेद, सुर-भेद इत्यादि के आधार पर दूसरे से पृथक् होती है, जिसे **'व्यक्तिबोली'** या **'व्यक्तिभाषा'** कहा जाता है।
- व्यक्ति-विशेष की बोली की पहचान के आधार पर **'आइडियोलैक्ट'** (Idiolect) की धारणा की कल्पना की गई।
- व्यक्ति बोली भाषा की लघुतम इकाई है, किन्तु यह कृत्रिम इकाई है, भाषा की स्वाभाविक इकाई नहीं।-**[श्यामसुंदर दास]**
- व्यक्ति बोली, व्यक्ति की आदत और शब्दों के चयन संबंधी वैशिष्ट्य के साथ भाषा का वैयक्तिक प्रयोग है। वस्तुतः, व्यक्ति बोली सामान्य भाषा का वैयक्तिक रूपान्तरण है।—**मेरिया पेई**

Scanned with CamSc

8. कृत्रिम भाषा (Artificial language)

- कृत्रिम भाषा परंपरागत या स्वभाव सिद्ध नहीं है। यह भाषा की सुबोधता और सुगमता को लक्ष्य में रखकर बनायी जाती है।—[**कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र**]
- कृत्रिम भाषा किसी व्यक्ति अथवा व्यक्ति के समूहों द्वारा बनाई अथवा उत्पन्न की जाती है। यह अंतरराष्ट्रीय संपर्क अथवा किसी विशिष्ट समूह के लिए उत्पन्न की जाती है।—[**मेरियो पेई, ग्लोसरी ऑफ लिंग्विस्टिक टेक्नोलॉजी**]
- कृत्रिम भाषा से तात्पर्य एक ऐसी भाषा से है, जो कुछ मनुष्यों ने किसी सुविधा के उद्देश्य से एकमत होकर गढ़ लिया हो। कृतिम भाषा का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण **ऍस्पिरैंतो या एस्परेन्तो नाम की भाषा है।**—[**मंगलेदव शास्त्री-भाषाविज्ञान**]
- डॉ. जमेनहाफ द्वारा निर्मित 'एस्परेन्तो' संसार भर में प्रसिद्ध कृत्रिम भाषा है। अन्य कृत्रिम भाषाएँ हैं—आक्सिडेंटल, इंटरलिंगुआ, नोवियल, इडो इत्यादि।

9. अपभाषा (Slang)

- अशिष्ट, असभ्य और अपरिष्कृत भाषा को अपभाषा नाम दिया जाता है।—[**कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान और राजभाषा**]
- अपभाषा विकृत भाषा है। इसमें न तो शिष्ट रुचि का ध्यान रहता है न शास्त्रीय आदर्शों एव मर्यादाओं की रक्षा होती है। इसमें प्रयुक्त शब्दों का प्रयोग अर्थापकर्षमूलक होता है और लाक्षणिक प्रयोग भी हीनताबोधक होते हैं।—[**हणमंत राव पाटिल, आधुनिक भाषाविज्ञान**]
- पतंजलि ने सर्वप्रथम अपभाषा की ओर ध्यान आकृष्ट किया। वह इसे 'म्लेच्छ **भाषा' की संज्ञा देते हैं।**
- वर्णनात्मक भाषाविज्ञान में अपभाषामूलक प्रयोग बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं।
- अपभाषा को **ग्राम्य भाषा, अनुचित या बुरी भाषा** अथवा **अश्लील** तथा गंदी भाषा भी कहते हैं।
- **अपभाषा के मुख्य तथ्य**—1. व्याकरण नियमों की उपेक्षा 2. अशिष्ट शब्द-प्रयोग 3. अशिष्ट वाक्य-रचना 4. अपरिष्कृत मुहावरों इत्यादि का प्रयोग।

10. विशिष्ट भाषा

- वर्ग-विशेष द्वारा परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग '**विशिष्ट भाषा**' (Professional language) कहलाता है। इसे '**व्यावसायिक भाषा**' भी कहते हैं।

Scanned with CamSc

- अलग-अलग समुदाय अथवा भिन्न-भिन्न वर्गों की भाषा जिसपर विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रभाव होता है, वह **'विशिष्ट भाषा'** कहलाता है।
- विशिष्ट भाषा को अंग्रेजी में Specific language कहा जाता है।
- वकीलों, अध्यापकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों तथा विभिन्न व्यवसायियों इत्यादि द्वारा प्रयुक्त भाषा विशिष्ट भाषा है।

11. मिश्रित भाषा

- **हणमंत राव पाटिल**-इस भाषा के दर्शन प्रायः वहाँ होते हैं जहाँ दो या दो से अधिक बोलियों का मिलन होता है।.... चीन के कुछ नगरों में प्रयुक्त **'पिजिन' इंग्लिश** इसका अच्छा उदाहरण है। **'कलकत्ता'** और **'बंबइया हिन्दी'** भी कुछ सीमा तक इसके उदाहरण हैं।
- **मेरियो-पेई** ने लिखा है कि—"मिश्रित भाषा को विविध भाषा-भाषियों के पारस्परिक प्रयोग की जनभाषा (Lingua Franca) मानकर सामान्यीकृत अर्थ में प्रयोग करनेवाले **मोलियार** हैं। इसी आधार पर इसे **संपर्क अथवा संकर भाषा (क्रिओल लैंग्वेज) कहते हैं।**

विशेषताएँ—

1. मिश्रित भाषा संपर्क भाषा का एक रूप है, जो द्विभाषी संदर्भों में प्रकट होता है।
2. मिश्रित भाषा 'संकर भाषा' है।
3. यह पारस्परिक प्रयोग की जनभाषा है।
4. मिश्रित भाषा को **'इंटरवेटेड भाषा'** कहा गया है।

12. अंतरराष्ट्रीय भाषा

- **मेरियो पेई**—अंतरराष्ट्रीय भाषा अंतरराज्जीय सम्प्रेषण की उद्देश्यपूर्ति के लिए एक वर्गबद्ध प्रयोग है। इस प्रकार के संप्रेषण के लिए भाषा प्राकृतिक हो सकती है। यथा-अंग्रेजी अथवा फ्रांसीसी अथवा संशोधित भाषा, यथा बेसिक इंग्लिश अथवा मानवरचित भाषा, [**यथा—ऐस्पेन्तो**]।

विशेषताएँ—

1. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विचार-विनिमय, व्यवहार, पत्र-व्यवहार की भाषा।
2. इसे **'विश्वभाषा'** भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे **'इंटरनेशनल लेंग्वेज'** कहते हैं।

Scanned with CamSc

13. प्रयोजनमूलक भाषा

- प्रयोजनमूलक हिन्दी के **प्रवर्त्तक मोटूरि सत्यनारायण** (1987) थे। प्रयोजनमूलक भाषा के प्रमुख 6 रूप मिलते हैं। 1. कार्यालयी भाषा 2. तकनीकी भाषा 3. संचार भाषा 4. वाणिज्यिक भाषा 5. समाजी भाषा और 6. साहित्यिक भाषा।
- **कार्यालयी भाषा** (Officialese)—सरकारी कामकाज और प्रशासन में प्रयुक्त होनेवाली भाषा।
- **तकनीकी भाषा** (Technicalese)—विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, शास्त्र इत्यादि के क्षेत्र में प्रयुक्त होनेवाली भाषा।
- **जनसंचारी भाषा** (Language of Mass media)—पत्रकारिता, आकाशवाणी, दूरदर्शन इत्यादि में प्रयुक्त होनेवाली भाषा।
- **वाणिज्यिक भाषा** (Commercialise)—वाणिज्य-व्यापार, बैंक, मंडियों इत्यादि में प्रयुक्त भाषा का रूप।
- **समाजी या सामाजिक भाषा** (Socialise)—सामाजिक कार्यकर्ताओं, सामाजिक संगठनों, राजनीतिज्ञों की भाषा का रूप।
- **साहित्यिक भाषा** (Language of Literature)—साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रयुक्त भाषा।

■■■

Scanned with CamSc